Vol 6 Issue 10 April 2017 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 IMPACT FACTOR : 4.6052(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | APRIL - 2017

GRT GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

'विविधोपयोगी साक्षात्कार'

प्रा. शिंदे अच्युत साधू
हिंदी विभाग प्रमुख , मु.सा. काकडे महाविद्यालय, सोमेश्वरनगर.

प्रस्तावना

प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ निर्माण मानव है। सृष्टि के लगभग सभी जीवों में मानव सर्वश्रेष्ठ प्राणी है क्योंकि अन्य प्राणियों की तुलना में विवेक और बुद्धि, विचार और जीवनशैली , भावाभिव्यक्ति और भाषासौंदर्य आदि की दृष्टि से मानव में अधिकता पाई जाती है। इसका कारण है मानव में अन्य को जानने की जिज्ञासा अधिक है। जिज्ञासा की यह प्रवृत्ति मनुष्य में जन्मजात है। इसी जिज्ञासा हेतु मानव अपना विकास कर पाया है। हर मनुष्य में जिज्ञासा वृत्ति रहती है। जिज्ञासा के द्वारा ही मनुष्य नवनवीन बातें जानने की कोशिश करना है। अतः जिस घटना, व्यक्ति, वस्तु, पदार्थ, प्रसंग के बारे में वह जानने की कोशिश करता है उसका उत्तर पाने के लिए वह प्रयास करता है। यह प्रयास ही उसके अंतःस में प्रश्न का निर्माण करता है। वह अपनी जिज्ञासा की पूर्ति के लिए, अपनी संतुष्टि के लिए प्रश्नोत्तर प्रणाली को अपनाता है। वैदिक काल से ही गुरू शिष्य के बिच यह प्रश्नोंत्तर प्रणाली के बिच हमें दिखाई देते हैं। यही प्रश्नोत्तर प्रणाली 'साक्षात्कार' का मूल बीज है। अतः हम यह कह सकते है कि आज का साक्षात्कार मूल रूप में वैदिक काल से चली आई परंपरा 'प्रश्नोत्तर प्रणाली' ही है। उसी का विकसित रूप आज का 'साक्षात्कार' है।

साक्षात्कार एक प्रकार की विशेष और विशिष्ट विधि है, प्रणाली है। इस विशेष विधि को प्राप्त करने के लिए, समझाने के लिए, समझााने के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता होती है। साक्षात्कार की यह प्रणाली उपयोग में लाने के लिए विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता होती है क्योंकि साक्षात्कार अलग अलग रूप में अलग अलग विषय पर, अलग अलग स्थान, अलग अलग परिस्थितियों में, प्रत्यक्ष संपर्क द्वारा, अप्रत्यक्ष रूप में, माध्यमों के लिए प्रतियोगिता के लिए, एक व्यक्ति का अनेक व्यक्तियों का, समूह का लिया जाता हैं।

आज साक्षात्कार का महत्व विभिन्न क्षेत्रों में दिखाई देता है। क्योंकि साक्षात्कार कई दृष्टियों से उपयोगी और महत्वपूर्ण है। सामान्य जीवन में नोकरी प्राप्त करने के लिए, उपजीविका का साधन प्राप्त करने के लिए, शिक्षा के क्षेत्र में परीक्षा के पश्चात् परीक्षार्थी या अभ्यर्थी के व्यक्तित्व, उसकी योग्यता, उपयोगिता, ज्ञान, विश्वास, उसकी जीवनशैली, उसमें छिपे मृदु कौशल, इत्यादि बातों को जानने के लिए साक्षात्कार की प्रणाली से हर उम्मीदवार को गुजरना पडता है। साक्षात्कार का मूल उददेश्य है, व्यक्ति की सही पहचान तथा उसके आंतरिक और बाहय व्यक्तित्व से परिचित होना और कराना।

साक्षात्कार को समझाने के लिए सर्वप्रथम उसका अर्थ, स्वरूप एवं उसे परिभषित करना आवश्यक है। साक्षात्कार क्या है? (What is Interview) अर्थात यह अंग्रेजी शब्द Interview का हिंदी रूपांतर है। इसका अर्थ है साक्षात करना या कराना या व्यक्ति का बोध प्राप्त होना।

डॉ. हरिमोहन (साहित्यिक विधाएः पुनर्विचार) के अनुसार साक्षात्कार वह विधा है जिसमें कोई व्यक्ति विशेष और एक सजग प्रश्नकर्ता आमने सामने होते हैं। उनके प्रश्नोंत्तरों के माध्यम से व्यक्ति–विशेष की साहित्यिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आदि मान्यताएँ, जीवन जगत यानी व्यक्तित्व–कृतित्व का उद्घाटन होता है। उसका चरित्र, उसकी अवधारणाएँ सामने आती है। उस व्यक्ति के अंतर्मन के देखे अनदेखे कोनों की झॉकी दिखाई जाती है। तथा ''इंटरव्यू या साक्षात्कार एक तरह का अंतर्व्यूह है, एक संवाद युद्ध। विशेष रूप से प्रश्नकर्ता का मोर्चा देखना होता है कि सामनेवाला इस मेर्चे का, इस संवाद प्रहार का सामना किस प्रकार करता है।''

साक्षात्कार से तात्पर्य से है कि ''किसी के अंतस में अंतःस्थल का अवलोकन करना। व्यक्ति के भीतरी गुणों में झॉककर उस व्यक्ति के विविध गुणों परिचित होना साक्षात्कार है।''

श्रीमती उषा देसाई के अनुसार ''साक्षात्कार दो व्यक्तियों के बीच का वार्तालाप होता है, जिसमें एक व्यक्ति पूर्वनिर्मित प्रश्न व्यक्ति विशेष से पूछकर जानकारी प्राप्त करता है।''

अर्थात् किसी भी व्यक्ति को जानने के लिए, समझने के लिए उसके व्यक्तित्व की पहचान के लिए जिस प्रश्नोंत्तर प्रणाली का प्रयोग किया जाता है ऐसी एक शास्त्रीय विधि 'साक्षात्कार' कही जा सकती है। परंतु इस विधि का पूर्णत्व प्रमाण है हमें उस व्यक्ति के द्वारा दी गई हमारी आशा से अधिक जानकारी तभी साक्षात्कार की प्रणाली पूर्णत्व प्राप्त करती है।

उपर्युकत विवेचन के आधार पर साक्षात्कार की कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित रूप में देखी जा सकती है–

1. व्यक्ति विशेष और साक्षात्कारकर्ता का आमने सामने होना आवश्यक है।
2. साक्षात्कार कर्ता एक या अधिक हो सकते है, इसी प्रकार व्यक्ति विशेष या समूह का साक्षात्कार लिया जा सकता है।
3. साक्षात्कार का तात्पर्य वार्तालाप नहीं बल्कि व्यक्ति–विशेष के आंतरिक गुणों को जानना है।
4. साक्षात्कार के माध्यम से व्यक्ति विशेष की योग्यता, उपयोगिता, विश्वास, विषय ज्ञान, सामाजिक व्यक्तित्व आदि की पहचान होती है।
5. साक्षात्कारकर्ता से विषयांतर न हो।
6. अभ्यर्थी पूछे गए प्रश्न में इतना उलझ न जाए किवह प्राकृतिक या स्वतंत्र रूप से अपने अनुभवों, अपनी धारणाओं और अपने व्यक्तित्व को अभिव्यक्त न कर पाए।
7. साक्षात्कार की प्रमुख विशेषता यह है कि अभ्यर्थी पूछे गए प्रश्न को ठीक तरह समझे, जाने, और पहचाने तभी वह प्रश्न का योग्य उत्तर दे सकता है।
8. साक्षात्कार 07 मिनट से लेकर 40 मिनट तक चल सकता है।
9. साक्षात्कार के लिए विषय का विस्तृत एवं योग्य ज्ञान, विविध संदर्भों की जानकारी, स्व की पहचान अत्यंत आवश्यक है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि उपर्युक्त कतिपय विशेषताओं के आधार पर अभ्यर्थी अपना साक्षात्कार विश्वासपूर्वक दे सकता है। साक्षात्कार को योग्य बनाने के लिए अभ्यर्थी या साक्षात्कारदाता के पास कई गुणों की आवश्यकता होती है उसे इस प्रकार देखा जा सकता है–

1. धैर्य की परीक्षाः–

साक्षात्कार अभ्यर्थी के ध्यैर्य की परीक्षा होती है। साक्षात्कार कर्ता कई बार नकारात्मक प्रश्न पूछकर अभ्यर्थी के धैर्य की परीक्षा लेते हैं। जैसे 'आपका चयन नहीं हुआ तो? आपको प्रारंभ में वेतन नहीं दिया जाएगा? आपका विषय ज्ञान अधूरा है? ऐसे कई प्रश्न होते हैं जिससे अभ्यर्थी घबरा जाता हैं। इसलिए ऐसे नकारात्मक प्रश्नों के उत्तर सकारात्मक रूप से, विश्वास के साथ दे ऐसे समय उसके धैर्य की परीक्षा होती है।

2. पूछे गए प्रश्न का रूप समझेंः–

साक्षात्कार में पूछें गए प्रश्न विषय से संबंधित होते हैं तों कभी अभ्यर्थी के व्यक्तित्व से संबंधित, तो कभी राष्ट्रीय, आंतरराष्ट्रीय, सामाजिक, राजनीतिक, गतिविधियों से संबंधित होते हैं। ऐसे समय में उसे पूछें गए प्रश्न के प्रारूप को स्वरूप को, समझकर बडे ही शांत स्वभाव से विचारपूर्वक उत्तर देना आवश्यक है।

3. देहबोली का पूर्ण उपयोगः–

पूछें गए प्रश्न का उत्तर देते समय साक्षात्कारदाता या अभ्यर्थी अपनी देहबोली का पूर्ण उपयोग करते हुए भावों, विचारों, के अनुकूल हावभाव, प्रभावोत्पादक शैली आदि का प्रयोग करें। व्यक्तित्व की पहचान के मुख्यावयव जैसे नेत्र, चेहरा, हाथ, बैठने का ढंग आदि में प्रभावोत्पादकता हो।

4. आकर्षक व्यक्तित्वः–

आकर्षक व्यक्तित्व से तात्पर्य केवल बाह्य व्यक्तित्व के आकर्षण से नहीं बल्कि साक्षात्कारदाता के पास आंतरिक व्यक्तित्व आकर्षित करनेवाला होना चाहिए। बाह्य व्यक्तित्व से तात्पर्य है, उसकी आंखें उसकी भाव भंगिमाएँ, उसकी पोशाख, उसकी देहबोली, मिलनसरिता आदि से है, अभिव्यक्ति कौशल, विविध विषयों का यथोचित ज्ञान इन सब में साक्षात्कारदाता परिपूर्ण हो तो वह साक्षात्कारकर्ता के आकर्षण का विषय बन सकता है। तथा उसके सभी गुणों से परिचित हो सकता है।

5. उच्चारण की स्पष्टताः–

अभ्यार्थी के पास भाषा उच्चारण के लगभग सभी कौशल विद्यमान हो, वह भाषा के सभी स्वरों एवं व्यंजनों से परिचित हो,–हस्व तथा दीर्घ स्वर के उच्चारण से परिचित हो, शब्दों के उतार चढाव, भावानुकूल भाषा, विचारों के अनुकूल शब्दों के उच्चारण, वाक्य की योग्यता के अनुरूप उसका उच्चारण आदि भाषा से संबंधित गुण होने चाहिए।

6. आत्मविश्वास एवं प्रसन्न चित्तः–

साक्षात्कारदाता का यह सबसे बडा गुण है, किसी भी कार्य, प्रसंग तथा घटना की पूर्ति व्यक्ति के आत्मविश्वास में छिपी होती है, मनुष्य के पास कई प्रकार के बल होते है।जैसे शरीर बल, बुद्धि का बल, तपोबल, लौकिकता का बल, सत्ता का बल इन सब के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण होता है। तथा व्यक्ति अपना जीवन यापन करता है परंतु इन सभी बलों का आधार 'आत्मबल' या 'आत्मविश्वास है। यदि आपके पास सबकुछ है और आत्मबल या आत्मविश्वास नहीं है तो अपने जीवन में यशस्वी नही हो सकता। अभ्यर्थी के पास आत्मविश्वास या आत्मबल हो तो वह साक्षात्कार में पूछें गए हर प्रश्नका योग्य, निश्चित उत्तर दे सकता है इसलिए उसके पास आत्मविश्वास होना वाहिए।

व्यक्ति में आत्मविश्वास तभी दिखाई देता है जबवह व्यक्ति प्रसन्न चित्त होता है। संत तुकाराम की यह उक्ति व्यक्ति के जीवनके लिए अत्यंत प्रेरणादाई है–''मन करा रे प्रसन्न। सर्व सिद्धिचे कारण।''

7. प्रत्युत्यन्नमतिः–

अभ्यर्थी का प्रत्युत्यन्नमति होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि साक्षात्कारदाता किसी भी विषय से संबंधित कभी भी प्रश्न पूछ सकते हैं। जैसे अभ्यर्थी के व्यक्तित्व विषयक विविधक्षेत्रों से संबंधित इस समय यदि अभ्यार्थी हाजिरजबाबी है तो उस प्रश्नों के उत्तर को वह अपनी कल्पक बुद्धि द्वारा योग्य उत्तर दे सकता है। इसलिए उसके पास प्रत्युत्यंन्नमति का होना अनिवार्य है।

8. अच्छी भाषाः–

भाषा व्यक्तित्व की, उसके संस्कार की सभ्यता की, शिक्षित अशिक्षित की पहचान होती है। भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति दूसरें हद्य को जीत लेता है, दूसरों की बुद्धि को आकर्षित कर सकता है। इसलिए अभ्यार्थी की भाषा मृदु, कोमल,स्पष्टता सके युक्त, प्रभावोत्पादक, भावों के अनुकूल, प्रश्नों एवं विचारों के अनुकूल उतार चढाव से युक्त होनी चाहिए। इसलिए महात्मा कबीर भी कहते हैं कि,

''ऐसी बाणी बोलिए मन का आपा खोई।
आपना तन शीतल करैं औरन को सुख होई।।''

इसके अतिरिक्त साक्षात्कारकर्ता के अन्य कई गुण हैं जिनका प्रयोग उसे साक्षात्कार में करना चाहिए। इन्हीं गुणों के आधार परवह अपने यश को प्राप्त कर सकता है।

निष्कर्ष:

संक्षेप में हम कह सकते है कि जीवन की जितनी व्यापकता है उतनी ही व्यापकता और विशालता साक्षात्कार की है। साक्षात्कार का उपयोग प्रत्येक क्षेत्र में व्यक्ति कर सकता है और अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकता है। साक्षात्कार के माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व का परिचय, उसके गुणों का परिचय प्राप्त करने साथ साथ सामाजिक अनुसंधान भी साक्षात्कार का लक्ष्य हो सकता है। विविध विषयों की जानकारी प्राप्त करने के लिए आज साक्षात्कार एक मौलिक एवं महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. प्रयोजनमूलक हिंदी का अध्ययन– डॉ. सुशिला गुप्ता,
सचिव संपादक मंडल जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,
प्रथम संस्करण 19993
2. मीडिया लेखन : सिद्धांत और व्यवहार–डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र,
संजय प्रकाशन दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2003
3. पत्रकारिता के विविध रूप एवं सिद्धांत–प्रियंका वाधवा, राकेश नैम,
रजत प्रकाशन नई दिल्ली 02, प्रथम संस्करण 2008
4. प्रयोजनमूलक हिंदी विविध परिदृश्य–डॉ. राजेशचंद्र त्रिपाठी, डॉ. पवन अग्रवाल
अलका प्रकाशन कानपूर 07, संस्करण 2008
5. प्रयोजनमूलक हिंदी –डौ. दक्षा निमावत
अभय प्रकाशन कानपूर 21, संस्करण 2011

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org